डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

सा.अ / 37 / पीआर / 2018 25.9.2018

प्रेस विज्ञप्ति

अखिल भारतीय मैथिली काव्योत्सव संपन्न

नई दिल्ली, 25 सितंबर 2018 : साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में अखिल भारतीय मैथिली काव्योत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें दस राज्यों से कवियों की प्रतिभागिता हुई। काव्योत्सव का उद्घाटन करते हुए मैथिली के प्रतिष्ठित कवि–कथाकार श्री गंगेश गुंजन ने इतने बड़े पैमाने पर पहली बार मैथिली साहित्य का इतना महत्त्वपूर्ण आयोजन देश की राजधानी दिल्ली में करने के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। मैथिली कविता की विकास–यात्रा पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक कालखंड में कविता अपना स्वरूप स्वयं गढ़ती है। आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि मैथिली भाषा–साहित्य के लिए यह सकारात्मक स्थिति है कि न केवल मिथिला में, बल्कि भिन्न भाषा क्षेत्रों में भी विद्यापति–पर्व तथा अन्य सांस्कृतिक–साहित्यिक आयोजनों के जरिए मैथिली अपनी पताका फहराए हुए है।

इस अवसर पर विषय–प्रवर्त्तन करते हुए अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. प्रेम मोहन मिश्र मैथिली की परंपरा और वर्तमान परिदृश्य पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि आज की कविता अभिधात्मक ज्यादा है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रतिष्ठित विद्वान और मैथिली कवि–नाट्यकार प्रो. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' ने कहा कि आज की यह बड़ी जरूरत है कि मैथिली सहित्य और कविता के पिछले पचास वर्षों का इतिहास लिखा जाए। समकालीन रचनाकर्म को संकलित और भारतीय सहित विदेशी भाषाओं में अनूदित करने की आवश्यकता पर भी उन्होंने बल दिया। सत्र संचालक अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा यह काव्योत्सव मैथिली भाषा के संपूर्ण और अखिल भारतीय उपस्थिति के अवगाहन का सौभाग्य हमें प्रदान करता है।

काव्योत्सव का विचार सत्र 'मैथिली कविता के वर्तमान परिदृश्य' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली कवि एवं आलोचक डॉ. भीमनाथ झा ने की। इस सत्र में अपने विचार व्यक्त करत हुए श्री अमलेंदु शेखर पाठक ने कहा कि कविता किसी भी शैली–शिल्प में हो, उसमें उसकी आत्मा का होना जरूरी है। वर्तमान मैथिली कविता अभिव्यक्ति के आत्मविश्वास से ओतप्रोत है। उन्होंने विगत दस वर्षों में प्रकाशित प्रमुख मैथिली कविता–संग्रहों के शीर्षकों का अपने वाक्यों में प्रयोग करते हुए मैथिली कविता के वर्तमान स्वरूप और स्वर की प्रभावी अभिव्यक्ति की। चर्चित मैथिली कवि–कथाकार एवं आलोचक श्री तारानंद वियोगी ने कहा कि वर्तमान में मैथिली कविता के क्षेत्र में छह पीढ़ियाँ सक्रिय हैं, जिनमें बड़ी संख्या युवाओं की है। कवियों का नामोल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि भाषा, शैली और विषय की दृष्टि से मैथिली

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

कविता का परिदृश्य वैविध्यपूर्ण होने के साथ–साथ आशा का संचार करनेवाला है, लेकिन कर्तव्यनिष्ठ आलोचक का अभाव खटकने वाली बात है। जाने–माने मैथिली कवि श्री रमेश ने कहा कि मैथिली कविता का वर्तमान परिदृश्य समाज की विकृतियों की आलोचना भी है तथा समाज कविता में अपना चेहरा भी देखता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि मैथिली कविता को सवर्ण समाज के दायरे से बाहर निकालकर दलित, पिछड़ा, वंचित एवं मुस्लिम समाज तथा मिथिला के सभी क्षेत्रों तक कवियों को ले जाना चाहिए। उपेक्षित समाज को मैथिली कविता का मुख्य स्वर एवं मुख्य प्रतिपाद्य बनाना समय की माँग है। सत्राध्यक्ष डॉ. भीमनाथ झा ने कहा कि उनके विचार से वर्तमान मैथिली कविता चिंतन प्रधान अधिक है, जबकि पूर्व की मैथिली कविता भावप्रधान थी, दिल के ज्यादा करीब थी। उन्होंने यह भी कहा कि आज की कविता एकरूप ज्यादा है। कविता पढ़कर कवि की पहचान प्रायः संभव नहीं।

काव्योत्सव के दो सत्र कविता–पाठ के लिए समर्पित थे, जिनकी अध्यक्षता श्रीमती शेफालिका वर्मा और श्री बुद्धिनाथ मिश्र ने की। कविता–पाठ करनेवालों में सर्वश्री सियराम झा सरस, विभूति आनंद, विद्यानंद झा, कुमार मनीष अरविंद, सुरेंद्रनाथ, सदरे आलम गौहर, रमण कुमार सिंह, पंकज पराशर, मनोज शांडिल्य, अरुणाभ सौरभ, चंदन कुमार झा और उमेश पासवान शामिल थे। पठित कविताओं में गीत, गजल और मुक्त छंद की कविताएँ शामिल थीं, जिनमें मानवमन की सूक्ष्म अभिव्यक्ति से लेकर परिवार, समाज और देश–दुनिया की स्थितियों, विसंगतियों आदि के चित्रण के साथ सामाजिक सरोकारों का चित्रण किया गया था। कविता–पाठ सत्रों का कुशल संचालन श्री अमलेंदु शेखर पाठक ने किया।

मौसम खराब होने के बावजूद बड़ी संख्या में मैथिली भाषा एवं कविता के प्रेमियों की उपस्थिति उत्साहवर्धक रही।

(के. श्रीनिवासराव)